अध्याय–14
पशु रोग (Animal Disease)

पशुओं में किसी भी बीमारी का होना या न होना इस बात पर निर्भर करता है कि वह पशु किस वातावरण में किस प्रकार के खान–पान तथा किस–किस के सम्पर्क में रहकर अपनी दिनचर्या पूर्ण करता है। पशुओं में जो बीमारियाँ होती हैं वह निम्न कारणों से होती हैं:–

1. जीवाणु जनित रोग– पशुओं में जितने भी विशिष्ट एवं घातक रोग होते हैं। ये सब जीवाणुओं की ही देन है। जीवाणु द्वारा पशुओं में पैदा होने वाले रोग जैसे गलघोंटू, विष ज्वर, लंगड़ा बुखार, क्षय रोग, संक्रामक गर्भपात, थनैला रोग, बच्चे के सफेद दस्त, टिटनस, एन्ट्रोटाक्सीमिया फिडकिया आदि हैं।
2. विषाणु जनित रोग– विषाणु जनित रोग जीवाणु से अधिक घातक होते है जैसे खुरपका–मुँहपका, अढ़ैया या ढाई दिन का बुखार, चेचक एवं पागलपन।
3. परजीवी रोग– परजीवी कीट पशुओं के शरीर में निवास करते है। इनमे से कुछ शरीर के ऊपर तथा कुछ शरीर के भीतर पाये जाते है।

   (अ) बाह्य परजीवी– ऐसे कीट जो पशुओं की त्वचा पर रहते है जैसे जूँ कलीली, पिस्सू आदि इनसे निम्न बीमारियाँ होती है– खाज एवं खुजली आदि।

   (ब) अन्तः परजीवी– इनसे निम्न बीमारियाँ होती है– थेलेसिओसिस, सर्रा, लाल पेशाब, फेसियोलाईसिस एवं अन्य पेट के कीड़े आदि।
4. खराब रख–रखाव, अनुचित देखभाल, गलत खान–पान एवं पोषक तत्व न्यूनता से होने वाली बीमारियाँ जैसे कब्ज, दस्त खांसी, अपच, न्यूमोनिया, रतौंधी आदि।
5. चयापचय जन्य रोग– शरीर में सामान्य चयापचय प्रक्रियाओं के विचलित होने से ये रोग उत्पन्न होते है जैसे मिल्क फीवर, कीटोसिस।
6. जन्मजात रोग– कुछ रोग पशु के पैदा होने के साथ ही होते है जैसे फ्री मार्टिन।

स्वस्थ पशु के सामान्य लक्षण (General Characters of Healthy Animal)

1. पशु की शारीरिक, मानसिक व कायिकीय क्रियाएँ, सामान्य रुप से चलना।
2. देखने पर चौकन्ने, कान खड़े हुये, चमड़ी चमकदार तथा बाल चमड़ी से लगे हुए रहते हैं।
3. शरीर का तापमान, श्वसन गति व नाड़ी गति सामान्य।
4. पशु का गोबर सामान्यतया ढीला, कठोर तथा रंग सामान्य।
5. खाना–पीना एवं जुगाली सामान्य रुप से करना।
6. आँखें सामान्य, चमकीली एवं चौकन्नी।
7. दुग्ध उत्पादन सामान्य तथा बछड़े को सामान्य रुप से दूध पिलाना आदि।

बीमार पशु के लक्षण (Characters of Unhealthy Animal)

1. पशु की शारीरिक, मानसिक व कायिकीय क्रियाएँ, सामान्य रुप से गड़बड़ा जाना।
2. खाना–पीना एवं जुगाली अनियमित या बंद कर देना।
3. आँख, मुँह व नाक से पानी या लार गिरना।
4. पशु सुस्त, कान लटके हुए तथा बाल खड़े हुए।
5. शरीर का तापमान, श्वसन गति कम या अधिक होना।
6. गोबर पतला या सख्त कठोर व बदबूदार करना।
7. दुग्ध की मात्रा में अचानक कमी होना।

पशु माता (पशु प्लेग) (Rinder Pest)

यह एक वायरस द्वारा फैलने वाला बहुत ही भयानक संक्रामक रोग है इसके प्रकोप से लाखों पशु प्रतिवर्ष मौत के घाट उतर जाते हैं यह रोग सभी जुगाली करने वाले पशुओं में होता है लेकिन गाय, भैंसों में यह रोग ज्यादा घातक होता है। एक बार इस रोग ग्रसित होने पर वही पशु कई वर्षो बाद भी इस रोग से पीड़ित हो सकता है। वैसे तो यह महामारी किसी भी मौसम मे हो सकती है। लेकिन सूखे मौसम में अधिक होती है।

संक्रमण फैलने का तरीका

1. दूषित चारे, दाने, पानी के सम्पर्क से यह रोग फैलता है।
2. रोगी पशु के सभी स्रावों जैसे गोबर आदि में ये वायरस बहुत अधिक मात्रा में होते हैं जो खाद्य पदार्थो को संक्रमित कर रोग फैलाते हैं।

रोग कारक

यह बीमारी छनित वायरस द्वारा होती है। यह छनित वायरस एक पशु से दूसरे पशु में पहुँचकर रोग फैलाता है। शरीर के अन्दर यह वायरस काफी समय तक जीवित रह सकता है लेकिन शरीर के बाहर यह 24 घण्टे से अधिक जीवित नहीं रहता है। रोगी के शरीर से निकलने वाले सभी स्रावों में यह वायरस उपस्थित रहता है।

प्रभावित अंग

इस रोग में रोगी पशु की सम्पूर्ण आहारनाल प्रभावित होती है आहारनाल में छाले हो जाते हैं।

रोग के लक्षण

1. पशु शरीर का तापमान 104-107^{0} फा. तक हो जाता है।
2. पशु की आंखें लाल हो जाती है तथा आँखों से पानी बहने लगता है।
3. पहले पशु का गोबर सख्त कठोर व खून भी साथ आता है लेकिन बाद में पानी जैसा पतला खून मिला हुआ दस्त करता है, इस कारण इस रोग को पौकनी रोग कहते है और अन्त में पशु पिचकारी की तरह तेजी से गोबर करता है जो काफी दूर गिरता है।
4. मुँह के अन्दर छाले हो जाते है तथा मुँह, आँख, एवं नाक से पानी बहने लगता है।
5. अन्त में ये स्राव गाढ़े होकर मवाद जैसी स्थिति में आ जाता है।
6. रोगग्रस्त में पशु 4–7 दिन में मर जाता है।

उपचार

1. सल्फामिडिन का 50 मिली का अन्तशिरा इन्जेक्शन (Inj. Sulphdimidine –50 ml) दें।
2. दस्त रोकने के लिये –सल्फामिडिन का 15 मिली का अन्तपेशी इन्जेक्शन (Inj. Sulphdimidine 15 ml) तुरन्त दें।
3. दस्त में रक्त रोकने के लिये। इन्जेक्शन क्रोम–10 मिली. –अन्तपेशी दें।
4. इन्जेक्शन एनालजीन–15 मिली.–अन्तपेशी दें।
5. इन्जेक्शन एवील–10 मिली.–अन्तपेशी दें।

रोग से बचाव

1. पशुओं में नियमित रिन्डर पेस्ट (R.P.) का टीका लगवाये।
   मात्रा–1 मिली. अन्तत्वचीय।
   समय–3 वर्ष में एक बार (जून माह) लगावें।
2. बीमार व स्वच्छ पशु को अलग अलग रखें।
3. मृत पशु को गाढ़ दें व इनके स्त्रावों को जला दें।
4. साफ सफाई का ध्यान रखें।

खुरपका–मुँहपका रोग (Foot & Mouth Disease)

इस रोग में सबसे पहले पैरों में छाले होने शुरु हो जाते हैं। जब पशु चरने जाता है तब यह छाले फटना शुरु कर देते हैं इससे बहुत से वायरस पैदा हो जाते हैं। जब इन घाव को पशु जीभ से चाटता है तब मुँह मे भी छाले हो जाते हैं। इसलिये इस रोग को खुरपका–मुँहपका रोग कहते है। यह पहले पैरों में व बाद में मुँह में होता है। यह बहुत शीघ्रता से फैलने वाला वायरस जनित रोग है सभी जुगाली करने वाले (दो खुर वाले) पशुओं में होता है। प्रायः यह रोग गाय, भैंस, भेड़ व बकरी में पाया जाता है। इस रोग में पशु की मृत्युदर तो कम होती है लेकिन पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

संक्रमण फैलने का माध्यम

1. दूषित चारे व पानी के सेवन से।
2. रोगी पशुओं के स्रावों के सम्पर्क में आने से।
3. हवा के माध्यम से।
4. दूषित मिट्टी के सम्पर्क आदि से।

रोग कारक

यह रोग वायरस की 7 प्रजातियों द्वारा फैलाया जाता है। जो निम्न है –

ए, ओ, सी, सेट I, सेट II, सेट III, एशिया सेट I इत्यादि।

प्रभावित अंग

इस रोग में मुख्यतः मुँह व होठों के बीच की झिल्ली में छाले हो जाते हैं। खुरों के बीच की झिल्ली में छालें होकर फूटने से घाव बन जाते हैं जिन पर मक्खियों का संक्रमण हो जाने पर कीड़े पड़ जाते हैं। इस अवस्था में रोग ज्यादा घातक सिद्ध होता है।

रोग के लक्षण

1. रोगी पशु को 105 – 106^{0} फा. तक तेज बुखार।
2. मुँह में छालें होने से लगातार लार गिरना जिसमें चिपचिपाहट की ध्वनि उत्पन्न होती है।
3. खुरों के बीच छालें होने से पशु का लंगड़ाकर चलना।
4. दूधारु पशु के दुग्ध उत्पादन में अचानक कमी होना।
5. पशु जुगाली करना बंद कर देता है।

उपचार

1. मुँह के छालों का पोटाश अथवा फिटकरी के घोल से धोकर उस पर 1 भाग सुहागा और बोरिक एसिड को ग्लिसरीन, शहद या शीरे में मिलाकर दिन में 2–3 बार लेप करें।

2. पैरों के छालों को कॉपर सल्फेट या लाल दवा के 1% घोल से सुबह शाम धोवें।
3. यदि घाव में कीड़ें पड़ गये हो तो घाव पर तारपीन के तेल का मोम बनाकर रखें।
4. इन्जेक्शन एनालजीन –15 मिली. अन्तः पेशी देवें। दर्द के लिये (बड़े पशुओं में)–3 दिन तक।
5. घावों से द्वितीयक संक्रमण रोकने व घावों को सुखाने के लिये इन्जक्शन एम्पीसिलीन–3 ग्राम का अन्तः पेशी लगाना चाहिए।
6. नजदीकी पशुचिकित्सालय मे तुरन्त सम्पर्क करना चाहिए।

रोग से बचाव

1. एफ.एम.डी.टीका (F.M.D. Vaccine) 1–2 मिली. अन्तःपेशी (I/M) वर्ष में दो बार (जून एवं दिसम्बर) लगाना चाहिए।
2. बीमार पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें।
3. रोगी मृत पशु को जमीन में गाढ़ दें या जला दें।
4. रोगी पशु के बिछावन को जला दें।
5. पशु के रहने की जगह को साफ सुथरा रखें।

जहरबाद (Black Quarter)

इस रोग को लंगड़ा बुखार, फड़ सूजन व चुर्चरिया नाम से भी जाना जाता है। यह एक तीव्र संक्रामक रोग है जो गाय भैंस में मुख्य रुप से तथा कभी–कभी भेड़ बकरी में पाया जाता है छोटी उम्र 4 माह से 3 वर्ष तक के पशु इस रोग से अधिक प्रभावित होते हैं। यह रोग प्रायः वर्षा ऋतु के बाद ज्यादा फैलता है। इस रोग में शरीर के मांसल भाग विशेष रुप से कंधे व पुठ्ठों पर गैस भरी सूजन आ जाने से पशु लंगड़ाने लगता है।

बीमारी फैलने का माध्यम

1. संक्रमित चारे पानी के उपयोग से इस रोग के बीजाणु (Spore) आहार नाल में चले जाने से।
2. संक्रमित मिट्टी व चारागाह के उपयोग से।
3. घाव के माध्यम से–शरीर पर होने वाले घावों के माध्यम से ये जीवाणु (Spore) शरीर में प्रवेश करते है तथा मांस पेशियों में पहुँचकर अपनी संख्या में वृद्धि करते हैं तथा विष पैदा करते हैं। इस विष (Toxin) के प्रभाव से मांस पेशियों के रेशे व रक्त कोशिकाएँ गल जाती है। तथा इनके सड़ने से गैस पैदा होती है जो त्वचा के नीचे जमा होकर सूजन पैदा करती है।

रोग कारक

यह रोग क्लोस्ट्रीडियम शोवियाई द्वारा अधिक फैलता है जो संक्रमित मांस पेशियों में पाया जाता है। शरीर से बाहर ये जीवाणु अपने चारों ओर कवच बनाकर मिट्टी व चारागाहों में काफी समय तक जीवित रहते हैं।

प्रभावित अंग

इस रोग में शरीर के मांसल भाग प्रभावित होते हैं जैसे गर्दन, कन्धे व पुठ्ठे की मांस पेशियाँ।

रोग के लक्षण

1. तेज बुखार जो 104 – 106° फा. तक।
2. कन्धे, पुठ्ठे या गर्दन की मांस पेशियों मे सूजन आ जाती है जो पहले गर्म व दर्द वाली होती है बाद में यह सूजन ठण्डी व पीड़ा रहित हो जाती है।
3. अगर इस सूजन वाली जगह को ऊपर दबावें तो चरचर की आवाज आती है। जो इस बीमारी की मुख्य पहचान है। अगर इस स्थान पर चीरा लगाया जाये तो काले रंग का झागदार व बदबूदार खून बाहर निकलता है।
4. पशु लंगड़ाकर चलता है।
5. पशु खाना पीना कम या बंद कर देता है।
6. शरीर के विभिन्न भागों में जकड़न शुरु हो जाती है।

उपचार (Treatment)

1. इन्जेक्शन प्रोकेन पेनिसिलिन फोर्ट (P.P.F.) का 80 लाख 10 ml., foy (Avil) में घोलकर सूजन वाली जगह पर तीन दिन प्रतिदिन लगावें।
2. सूजन कम करने के लिये
   – इन्जे0 प्रेडनीसोलोन – 15 मिली. – अन्तः पेशी
   –इन्जे0 डेक्सोना – 10 मिली. – अन्तः पेशी
3. दर्द के लिये –इन्जे0 नीमोवेट – 15 मिली. – अन्तः पेशी

रोग से बचाव

1. प्रतिवर्ष बरसात (जून माह) में बी. क्यू. 5 मिली. का टीका लगवायें।
2. मृत पशु को गाढ़ दें या जला दें।
3. स्वस्थ व बीमार पशुओं को अलग अलग रखें।
4. बीमार पशु के स्राव आदि को जला दें।
5. पशुशाला की समय–समय पर लाल दवा या फिनायल से सफाई करें।

एन्थ्रेक्स (Anthrax)

इस रोग को जहरी बुखार/तिल्ली रोग से भी पहचाना जाता है। यह एकाएक व तेजी से फैलने वाला रोग है जो एक लम्बे क्षेत्र में फैलता है। यह रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी में फैलता है।

संक्रमण फैलने का तरीका

1. संक्रमित चारे, पानी व मिट्टी के सम्पर्क में आने से।
2. खून चूसने वाली मक्खी या मच्छर से जो संक्रमित खून को एक पशु से दूसरे पशु में पहुँचाते हैं।
3. शरीर में होने वाले घाव/चोट द्वारा।
4. संक्रमित मनुष्यों द्वारा पशुओं में।

रोग कारक

यह रोग बेसीलस एन्थ्रेसिस नामक जीवाणु द्वारा फैलता है। यह जीवाणु बीमार पशु के रक्त एवं ऊतकों (बाल, खाल, ऊन, शरीर से निकलने वाले सभी स्रावों) में पाया जाता हैं। यह एक जेनेटिक बीमारी है जो पशुओं से मनुष्य में व मनुष्य से पशुओं मे फैलती है। पशु की मृत्यु के बाद भी ये जीवाणु हवा व मिट्टी में सुरक्षा कवच बनाकर कई वर्षों तक जीवित रह सकते हैं तथा अनुकूल मौसम मिलने पर रोग फैलाते हैं इसलिये इसे मिट्टी जनित रोग भी कहते हैं।

प्रभावित अंग

इस रोग में रक्त प्लीहा एवं शरीर के समस्त बाहरी ऊतक प्रभावित होते है।

रोग के लक्षण

1. मुँह, नाक व गुदा से झागदार काला खून निकलता है।
2. शरीर का तापमान 105 – 107 ° F तक।
3. बीमार भेड़ों के पैर फूले हुये, सांस लेने में तकलीफ, जमीन पर आड़ी पड़ी हुई दाँत किटकिटाती है।
4. कभी–कभी जीभ, गला व अगले पैरों में सूजन आ जाती है।
5. अन्त में खूनी दस्त का होना।
6. गर्भित पशुओं में गर्भपात का होना आदि।

उपचार

1. सल्फाडिमिडिन का इन्जेक्शन 10 मिली. अन्त शिरा पशुचिकित्सक से लगवाएँ।
2. इन्जेक्शन डेक्सोना 3 मिली. अन्तः पेशी लगवाएँ।
3. बुखार व दर्द के लिये इन्जेक्शन टाइसिन का 15 मिली. अन्तः पेशी लगवाएँ।

रोग से बचाव

1. प्रतिवर्ष जून माह में एन्थ्रेक्स स्पोर वेक्सीन 1 मिली. अन्तः त्वचीय लगवाएँ।
2. मृत पशु को बिना खाल उतारे जमीन में 5 फीट गहराई में गाढ़ दें।
3. सभी स्त्रावों व आस–पास की मिट्टी को जला दें।
4. मृत पशु के रहने की जगह की सफाई फिनायल से करे।
5. रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग करें।

गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)

यह गाय, भैसों व भेड़ों में होने वाला भयंकर जीवाणु जनित रोग है। एक बार लक्षण प्रकट होने पर मृत्युदर 80–90 प्रतिशत तक रहती है। यह रोग प्रायः बरसात के मौसम में अधिक होता है तथा कम उम्र के 6 माह से 2 वर्ष तक के पशु अधिक प्रभावित होते हैं। लम्बी दूरी की यात्रा के बाद भी गलघोंटू रोग होने की संभावना रहती है। इसी कारण इसे शिपिंग फीवर भी कहते हैं।

संक्रमण फैलने का तरीका

1. यह रोग, रोगजनक जीवाणुओं के पाचननाल, श्वासनाल तथा त्वचा के माध्यम से शरीर में प्रवेश करने पर फैलता है। रोगी के लार में भारी संख्या में जीवाणु उपस्थित रहते है जो विभिन्न माध्यमों से संक्रमण फैलाने का कार्य करते हैं।
2. खून चूसने वाली मक्खी एवं मच्छरों से, जो संक्रमित पशु का खून चूसकर स्वस्थ पशु का खून चूसते हैं।
3. रोगी पशु के दूषित चारे, पानी, स्त्राव आदि के सम्पर्क में आने से।

ये जीवाणु शरीर में प्रवेश कर जहर (Toxin) पैदा करते हैं जिसके कारण सारे शरीर में टोरमिया (Toremia) हो जाता है जो मृत्यु का मुख्य कारण है।

रोग कारक

इस रोग को निम्न जीवाणु फैलाते हैः–

1. पाश्च्यूरेला बोवीसेप्टिका (Pasturella boviseptica)– गायों में ।
2. पाश्च्यूरेला बुबैली सेप्टिका *(Pasturella buballiseptica)*– भेसों में ।
3. पाश्च्यूरेला ऑविस *(Pasturella ovis)*– भेड़ बकरी में ।

प्रभावित अंग

विष बनने के कारण पूरा शरीर ही प्रभावित होता है परन्तु मुख्य रुप से श्वसन नाल प्रभावित होती है। गले में सूजन आ जाती है। जिससे पशु को सांस लेने में तकलीफ होती है और घर्र–घर्र की आवाज आती है।

रोग के लक्षण

1. 105 – 107° F तक तेज बुखार, शरीर में कपकपाहट होने से पशु एक दिन में ही मर जाता है।
2. गले के नीचे व अगले पैरो के बीच में गर्म व कठोर सूजन का आ जाना।
3. सांस लेने में तकलीफ होने से घर्र–घर्र की आवाज आना, मुँह व नाक से स्राव निकलना।
4. आँखें लाल व सूजी हुई होना।

5. अन्त में पशु का दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती है।

उपचार

1. सल्फामिडिन 30ml/50 kg wt. पर अन्तशिरा इन्जेक्शन प्रत्येक 6–6 घण्टे में 2 दिन तक देवें।
2. सूजन रोकने के लिये – प्रेडनीसोलोन 10–15 मिली. अन्तपेशी इन्जेक्शन।
3. दर्द के लिये – निमोवेट 15 मिली. अन्तपेशी इन्जेक्शन।
4. डेक्सोना – 10 मिली. अन्तपेशी इन्जेक्शन।
5. ऑक्सीटेट्रासाइक्लीन – 30 मिली. अन्तपेशी इन्जेक्शन।

रोग का नियंत्रण

1. प्रतिवर्ष बरसात से पूर्व मई–जून माह में एच.एस. (H.S.) का टीका लगावें।
2. पशु में पहला एच. एस. का टीका 6 माह की आयु में लगवायें।
   (i) एच. एस. टीका – 5 मिली. अन्तत्वचीय इन्जेक्शन।
   (ii) एच. एस. + बी. क्यू. संयुक्त टीका – 2 मिली. अन्तत्वचीय इन्जेक्शन।
   (iii) एच. एस. + बी.क्यू. + एफएमडी टीका – 2 मिली. गहरा अन्तत्वचीय इन्जेक्शन प्रतिवर्ष मई जून माह में।
3. मृत पशु को गाढ़ दें या जला दें।
4. स्वस्थ व बीमार पशुओं को अलग अलग रखें।
5. बीमार पशुओं के दूषित चारे व स्राव आदि को जला दें।

थनैला रोग (Mastitis)

दुधारु पशुओं का यह एक संक्रामक रोग है। इस रोग में गादी/अयन गर्म, कठोर व पीड़ादायक हो जाता है और दूध की गुणवत्ता में फर्क आना शुरु हो जाता है। अगर इस समय पशु को इलाज दे दिया जाता है तो 2–3 दिन में पशु स्वस्थ हो जाता है अन्यथा गादी/अयन में कठोरता आना शुरु हो जाती है और अन्त में दूध आना भी बंद हो जाता है। थन या अयन हमेशा के लिये बेकार हो जाते है। इस रोग में पशु की मृत्यु नही होती है लेकिन दुग्ध उत्पादन पर बुरा असर पड़ने के कारण पशुपालक को बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से दूध के माध्यम से क्षय रोग, ब्रुसेल्लोसिस (गर्भपात) आदि जैसे रोग मनुष्य में फेलने की संभावना रहती है।

संक्रमण फैलने का तरीका

1. थनों के दुग्ध मार्ग से संक्रमण थनों में जाता है।
2. पशु बाँधने की जगह का प्रायः गंदा होना व गंदे हाथों से दूध निकालने से।
3. दूध निकालने के बाद प्रायः दूध की बूंदे थन पर लगी होती है एवं जब पशु नीचे गंदे फर्श पर बैठता है तो संक्रमण हो जाता है।
4. थन या अयन को चोट लगने से।
5. गलत विधि से दूध निकालने पर।

रोग कारक

यह रोग प्रायः जीवाणु, कवक व सुक्ष्म प्लाज्मा आदि से हो सकता है लेकिन मुख्य रुप से जीवाणु इसके लिये उत्तरदायी होते हैं। यह रोग देशी नस्ल की गायों की अपेक्षा संकर नस्ल की गायों में अधिक होता है। गाय, भैंस में अधिकतर स्ट्रैप्टोकोकाई एगैलेक्शिया (*Streptococci agalactiae*) जीवाणु द्वारा फैलता है

प्रभावित अंग

इस रोग में थन व अयन प्रभावित होते है। थन/अयन पर सूजन व कठोरता आ जाने से दूध बनाने वाली कोशिकाएँ धीरे–धीरे खराब हो जाती है और पशु द्वारा दुग्ध उत्पादन कम या बंद हो जाता है।

रोग के लक्षण

1. अयन या थन में सूजन, कठोरता एवं दर्द होना तथा हाथ लगाने पर गर्म महसूस होना।
2. दूध आना कम हो जाता है और दूध के रंग मे परिवर्तन होता है। पहले हल्का पीला फिर धीरे–धीरे लाल रंग का आने लगता है तथा अंत में दूध फटे दही जैसा आता है।
3. दूध से बदबू आना।
4. कभी–कभी थनों में गठानें पड़ना एवं रोगग्रस्त थन का सिकुड़ जाना अथवा छोटा हो जाना।
5. दूध छेने के पानी जैसा हो जाता है और उसमें दूध के थक्के, खून तथा मवाद (पस) के थक्के नजर आते हैं।

उपचार

1. एण्टीबायोटीक सुबह शाम दें। इन्जेक्शन एम्पीसिलीन एवं क्लोकासिलीन 3 ग्राम –अन्तः पेशी दें।
2. फंगस एण्टीबायोटिक दें। इन्जेक्शन टाइसिन 15 मिली. –अन्तः पेशी दें।
3. दर्द व सूजन के लिये –इन्जेक्शन मेलोनेक्स 15 मिली. –अन्तः पेशी दें।
4. इन्जेक्शन एवील 10 मिली. –अन्तः पेशी दें।
5. संक्रमित थन से सारा दूध निकालकर मेस्टिटीस ट्यूब सुबह शाम थन में चढ़ावे, जरुरत होने पर थन में 5 मिली. ओ. टी. सी. भी चढ़ा दें।
6. गादी गर्म होने पर दिन में 5–6 बार ठण्डे पानी का छिड़काव करें तथा यदि गादी (अयन) ठण्डी हो तो गर्म पानी का छिड़काव करें।

रोग से बचाव

1. पशुशाला तथा दूध निकालने वाला ग्वाला साफ–सुथरा होना चाहिए।
2. दूध दोहने के पहले व बाद में थनों को साफ पानी से धोना चाहिए।
3. दूध पूर्ण हस्त विधि व सही समय पर निकालना चाहिए।
4. थन या अयन के घाव या चोट का उपचार तुरन्त करवायें।
5. हमेशा स्वस्थ पशु का दूध पहले व रोगी पशु का दूध बाद में निकालें।
6. अयन में दूध बिल्कुल भी नही छोड़े।
7. पशुशाला की नियमित सफाई का ध्यान रखना चाहिए।

टिक फीवर (Tick Fever)

टिक फीवर पशुओं में होने वाला एक बुखार है जो रक्त परजीवी बोओफिलस माइक्रोप्लस द्वारा फैलता है।

रोग के लक्षण

1. भूख में कमी।
2. वजन घटना।
3. बुखार की अचानक शुरूआत।
4. खून की कमी।
5. दूध उत्पादन में कमी

रोकथाम एवं उपचार

- ➢ रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिए।
- ➢ जिस स्थान पर टिक बुखार का प्रकोप हो उस स्थान के आस–पास की वनस्पति आदि को जला देना चाहिए।
- ➢ पशुशाला में विभिन्न कीटनाशी दवाओं का समय–समय पर पशु चिकित्सक की सिफारिश के अनुसार छिड़काव करवाना चाहिए।
- ➢ ब्यूटॉक्स का छिड़काव पशु चिकित्सक की सिफारिश के अनुसार करना चाहिए।

दुग्ध ज्वर (Milk Fever / Hypocalcemia)

यह एक चयापचयी (Metabolic) रोग है जो गाय, भैसों में ब्याने के कुछ समय पहले या ब्याने के कुछ समय बाद होती है। इसमें पशु के शरीर में कैल्शियम की भारी कमी हो जाती है। माँसपेशियाँ कमजोर हो जाती है। शरीर में रक्तचाप की काफी कमी हो जाती है। अन्त में पशु काफी सुस्त, बेहोश सा तथा निढाल हो जाता है। प्रायः दूध ज्वर अधिक दूध देने वाली संकर गाय, भैसों में अधिक होता है। यह रोग अधिकतर ब्याने के 5–7 दिन के अन्दर हो जाता है। इस रोग में पशु का सामान्य तापमान कम हो जाता है। सामान्य रुप से गाय, भैसों के सीरम में कैल्शियम लेवल 9–11 mg/100ml होता है। इस रोग में यह स्तर घटकर 7% हो जाता है।

रोग का कारण

1. रक्त सीरम (Blood Serum) में कैल्शियम स्तर 7 mg/100 ml. से कम होना।
2. रक्त में कैल्शियम की कमी प्रमुख चार कारणों से होती है।
   - (अ) ब्याने के बाद काफी मात्रा में कैल्शियम खीस (कोलस्ट्रम) के साथ बाहर आ जाता है। खीस में रक्त से 12–13 गुना अधिक कैल्शियम होता है।
   - (ब) ब्याने के बाद एकाएक खीस में बहुत ज्यादा कैल्शियम निकल जाने के कारण हड्डियों से शरीर को कैल्शियम जल्दी नही मिल पाता है।
   - (स) यदि ब्याने के बाद पशु को कम मात्रा में आहार दिया जाता है तो रुमन व आंतों में भी कम आहार होने से ये अंग कम सक्रिय होने और कैल्शियम का अवशोषण भी कम होगा। थके हुये व भूखे पशुओं में दूध ज्वर जल्दी होता है।
   - (द) आहार में कैल्शियम की कमी का होना।

रोग के लक्षण

1. पहले पशु सुस्त और धीरे–धीरे कमजोर या ढीला हो जाता है।
2. पशु अपनी गर्दन को पेट की ओर मोड़कर निढाल सा बैठा रहता है।
3. शरीर का तापमान सामान्य से थोड़ा कम हो जाता है पशु के हाथ लगाने पर पशु ठण्डा महसूस होता है।
4. आँखें सुख जाती है, आँखों की पुतलियां फैलकर बड़ी हो जाती है।
5. रोग होने के 2–3 दिन बाद पशु में चलने फिरने तक की क्षमता नही रहती है तथा वह एक जगह बेहोशी की अवस्था में पड़ा रहता है।
6. मांसपेशियां कमजोर हो जाने के कारण पशु गोबर व पेशाब करने में असमर्थ हो जाता है।

उपचार

1. रक्त में कैल्शियम की कमी दूर करने के लिये तुरन्त रक्त में कैल्शियम बोरो ग्लूकोनेट 500 मिली. का अन्तशिरा इन्जेक्शन लगावें।
2. अगर कभी कभी कैल्शियम के साथ मैग्निशियम की भी कमी हो तो कैल्शियम मैग्निशियम बोरो ग्लूकोनेट 500 मिली. का अन्तशिरा इन्जेक्शन पशु चिकित्सक की सिफारिश से लगावें।

रोग से बचाव

1. पशु को कैल्शियम युक्त आहार खिलावें।
2. पशु को ब्याने के पूर्व से ही विटामिन की खुराक देना शुरु कर दें।
3. ब्याने के पूर्व ही पशु को कैल्शियम युक्त (Calcium Rich) दाना खिलाना शुरु कर देना चाहिए।
4. प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज लवण खिलावें।

फड़किया रोग (Enterotoxemia)

यह अधिकतर रोमन्थी पशुओं में होने वाला रोग है इस रोग में जीवाणु आंतों में पहुँचकर जहर (Toxin) पैदा करते है जिसके कारण इस रोग के लक्षण प्रकट होते है। यह रोग प्राय भेड़ व बकरियों में ज्यादा पाया जाता है जो एक जानलेवा घातक बीमारी है। इस रोग में एक साथ बड़ी संख्या में भेड़ व बकरियाँ मर जाती है।

संक्रमण फैलने का तरीका

1. संक्रमित चारे, दाने व पानी के उपयोग से यह जीवाणु पशु की आँतों में रहता है तथा गोबर के माध्यम से चारागाह व पानी के स्रोतों को दूषित कर रोग फैलाता है।

रोग कारक –

यह रोग क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिन्जेन्स नामक जीवाणु द्वारा फैलता है। यह जीवाणु अपनी अलग अलग प्रजातियों के हिसाब से अलग अलग जाति पशुओं में रोग फैलाता है। इसकी मुख्य प्रजातियाँ ए, बी, सी, डी, व ई हैं। इनमें डी प्रजाति सबसे खतरनाक होती है क्योंकि इनसे उत्पन्न जहर खतरनाक होता है। यह प्रजाति भेड़, बकरियों में रोग फैलाती है।

प्रभावित अंग

यह जीवाणु आहार नाल द्वारा प्रवेश कर पशु की आँतों मे निवास करता है तथा यहीं पर विष बनाता है।

रोग के लक्षण

1. पेट में दर्द होने के कारण भेड़ या बकरी बैचेन हो जाती है और बार बार उठती या बैठती है।
2. पशु को आफरा आ जाता है व सांस लेने में तकलीफ होती है।
3. हाथ, पैरों में ऐंठन, अगले पैरों के घुटने के बल पर चलता है।
4. पेट दर्द के कारण पशु दाँत किटकिटाता है।
5. इस रोग में भेड़ें रात को स्वस्थ होती परन्तु सुबह मरी हुई मिलती हैं।
6. आँखो से आँसू तथा मुँह से झाग निकलते है।
7. अन्त में खूनी दस्त होती है तथा लेटे–लेटे पैरों को साईकिल की तरह चलाते हुए मृत्यु हो जाती है।

उपचार

1. डेक्सोना 3 मिली. अन्तपेशी इन्जेक्शन
2. एण्टीबायोटीक दें – इन्जेक्शन ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन (O.T.C.)-5 मिली. अन्तपेशी तीन दिन तक ।
3. पेट दर्द को रोकने व ऐठन कम करने के लिये – इन्जेक्शन डाई क्लोमिन हाइड्रोक्लोराइड 3 मिली. अन्तपेशी देना।
4. मांसपेशियों की अकड़न रोकने के लिये – इन्जेक्शन न्यूरोबियोन 3 मिली. अन्तपेशी इन्जेक्शन देवें।

रोग से बचाव

1. ई. टी. वी. का टीका लगावें।
2. ई.टी. वी. प्रकार डी – 2.5 मिली. अन्तत्वचीय या अन्तपेशीय।
3. मृत पशु को गाढ़ दें तथा इसके स्त्राव, बिछावन आदि को जला दें।
4. बीमार पशुओं को तुरन्त अलग कर दें।
5. जिस क्षेत्र में बीमारी का प्रकोप ज्यादा हो उस क्षेत्र में भेड़ों को चराने ना ले जावें।

सर्रा (Surra)

यह बुखार की एक बीमारी है। जिसमें पशु को तेज बुखार रूक– रूक कर आता रहता है। जिसमें पशु चक्कर काटता है और उत्तेजित हो जाता है। यह बीमारी हर प्रकार के पशु को प्रभावित करती है।

रोग का कारण– यह बीमारी ट्रिपेनोसोमा ईवनसाई नामक प्रोटोजोवा से होती है। यह रक्त परजीवी है जो मक्खियों द्वारा फैलता है।

रोग के लक्षण

1. **अधिक तीव्र रूप** – एकाएक तेज बुखार आता है। उत्तेजना होती है। पशु इधर–उधर भागता है। वह नशीला सा लगता है तथा अपने सिर को दीवार या जमीन पर मारता है। खाना–पीना छोड़ देता है और शीघ्र मर जाता है।
2. **तीव्र रूप** – बुखार का न होना, गोले में चक्कर लगाना, खड़े रहना, कभी खाना, कभी न खाना, जुगाली कम करना, बंध–बंधासा चलना, पसीना आना तथा गिर पड़ना इस रोग के मुख्य लक्षण हैं।
3. **कम तीव्र होना** – इसमें बुखार नही आता परन्तु पशु पागल की तरह घूमता है। खाना–पीना छोड़ देता है और उसको कब्ज हो जाता है। वह दुर्बल व शक्तिहीन होकर गिर जाता है और 2 से 3 सप्ताह के बीच मर जाता है।

रोकथाम एवं उपचार

1. चिकित्सा – इंजेक्शन एण्ट्रीसाइडप्रोसाल्ट 2.5 से 3 ग्राम दवा 15 मिली. डिस्ट्रीलड वाटर में घोल कर चमड़ी में लगाना चाहिए।
2. इंजेक्शन बेरेनिल 5 ग्राम को 25 मिली डिस्ट्रील वाटर में घोलकर चमड़ी में लगाना चाहिये ।
3. इन्जेक्शन ट्राईक्वीन 2.5 ग्राम को 15 मिली. डिस्ट्रील वाटर में घोलकर चमड़ी में लगाना चाहिये ।
4. पशु को एनोरेक्सन फोर्ट गोली या प्रोमीन एच.एस. की दो–दो गोलियाँ सुबह शाम देनी चाहिए ।
5. इन्जेक्शन टोनाफास्फोन 10 मिली. व सी.बी.जी. 500 मिली नस में देनी चाहिए ।

खाज (Mange) व खुजली (Scabies)

यह छूतदार चर्म रोग है यह माइटस नामक परजीवी से उत्पन्न होता है जो चमड़ी के अन्दर घुसकर अपना असर करते है जो कि एक पशु से दूसरे पशु में शीघ्रता से फैलती है।

रोग के लक्षण – शरीर पर सूजन आना, फुन्सियाँ होना एवं शरीर के बालों का गिरना इस रोग के प्रमुख लक्षण है इस रोग में चमड़ी का रंग लाल हो जाता है और पशु शरीर को खुजलाता रहता है। सभी पशुओं में इस बीमारी के लक्षण एक ही समान होते है। यह बीमारी चेहरे, होंठ और पैरों से आरम्भ होती है तथा सिर, गर्दन एवं पुट्ठे तक पहुँच जाती है। पूँछ की जड़ पर भी यह रोग बहुत होता है। त्वचा सूजकर मोटी होने लगती है। खुजाने पर उसी स्थान से पीप सा निकलने लगता है। गीली खुजली में छाले होकर फूट जाते है जिससे पशु को दर्द होता है

रोग के कारण – यह रोग चार प्रकार के कीटाणुओं द्वारा फैलता है जो निम्न है–

1. सोरप्टिस कम्युनिस *(Psorpties communis)*
2. कोरीओप्टिससिंबोइटिस *(Corioptic symbiotes)*
3. डेमोडेक्स फौलीक्युलोरम *(Demodex flloliculloruml)*
4. सारकौप्टिस स्कैबी *(Sarcoptes scabiei)*

रोकथाम एवं उपचार

- सभी रोगग्रस्त पशुओं के बांधने के स्थान को अच्छी प्रकार से रोगाणु रहित कर देना चाहिए।
- रोगी पशु को अन्य पशु से अलग कर दें।
- सल्फर पाउडर को तेल में मिलाकर लगावें ।
- हिमेक्स मल्हम लगावें ।
- बुटाक्स 5 मिली को 1 लीटर पानी में घोलकर शरीर पर लगावें।
- इन्जेक्शन आवरमेक्टिन 1 मिली. प्रति 50 किग्रा वजन के हिसाब से चमड़ी में लगावें ।

महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)

- पशु प्लेग वायरस द्वारा फैलने वाला बहुत ही भयानक संक्रामक रोग है।
- खुरपका–मुँहपका रोग में सबसे पहले पैरों मे छाले होने शुरु हाते है और बहुत से वायरस पैदा हो जाते हैं। जब इन घाव को पशु जीभ से चाटता है तब मुँह में भी छाले हो जाते हैं। इसलिये इस रोग को खुरपका–मुँहपका रोग कहते है।
- जहरबाद रोग क्लोस्ट्रीडियम शोवियाई नामक जीवाणु द्वारा फैलता है।
- गलघोटू रोग में पशु को सांस लेने में तकलीफ होती है

सारणी 14 .1 : टीकाकरण

क्र. सं.	टीके का नाम	बछड़ों की आयु	टीके की मात्रा	टीका लगाने का स्थान	पुनः टीकाकरण
1	एच. एस. वेक्सीन	3 माह	5 मिली.	त्वचा	प्रतिवर्ष
2	बी. क्यू. वेक्सीन	3 माह	5 मिली.	त्वचा	प्रतिवर्ष
3	एफ. एम. डी. वेक्सीन	6 माह	2 मिली.	त्वचा	वर्ष में दो बार
4	ई.टी. वेक्सीन	3 माह	2.5 मिली.	त्वचा	प्रतिवर्ष
5	ब्रुसेलिस सी. – 19 वेक्सीन	3 माह (मादा बछड़ों में)	5 मिली.	त्वचा	जीवन में एक बार
6	आर. पी. वेक्सीन	6 माह	1 मिली.	त्वचा	3 वर्ष में एक बार
7	पी. पी. आर. वेक्सीन	3 माह (भेड़, बकरी)	1 मिली.	त्वचा	प्रतिवर्ष
8	एन्थ्रेक्स स्पेयर वेक्सीन	3 माह	1 मिली.	त्वचा	प्रतिवर्ष

और घर्र–घर्र की आवाज आती है।

- ➢ थनैला रोग देशी नस्ल की गायों की अपेक्षा संकर नस्ल की गायों में अधिक होता है।
- ➢ दुग्ध ज्वर एक चयापचयी (Metabolic) रोग है।
- ➢ सर्रा रोग नामक बीमारी *ट्रिपेनोसोमा ईवनसाई* नामक प्रोटोजोवा से होती है।

टीके रोग विशेष के लिये वर्ष में 1 बार या 2 बार लगाये जाते हैं। अर्थात् टीकाकरण करने का सबसे उपयुक्त समय मई–जून एवं नवम्बर–दिसम्बर माह होता है। टीके द्वारा रोग से लड़ने की क्षमता 6 माह या 1 वर्ष की होती है। अतः 6 माह या 1 वर्ष बाद पुनः नियमित टीकाकरण करवायें।

नोट –गाय भैंस के 3 माह से छोटे बछड़ों को टीके नही लगायें तथा भेड़ बकरी में 2 माह से कम के मेमनों में टीकाकरण नहीं करें।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. सर्रा बीमारी का कारण है –
   (अ) जीवाणु (ब) विषाणु
   (स) प्रोटोजोआ (द)उपर्युक्त में से कोई नहीं
2. थनैला रोग किसके द्वारा फैलता है?
   (अ) जीवाणु (ब)विषाणु
   (स) प्रोटोजोआ (द)उपर्युक्त में से कोई नहीं
3. दुग्ध ज्वर किसकी कमी के कारण होता है?
   (अ) जिंक (ब) कैल्शियम
   (स) आयरन (द) मैंगनीज
4. कौनसा रोग होने पर पशु घर्र–घर्र की आवाज करता है?
   (अ) थनैला (ब)सर्रा
   (स) दुग्ध ज्वर (द)गलघोटू
5. दुग्ध ज्वर रोग है।
   (अ) जीवाणु (ब) चयापचयी
   (स) विषाणु (द)कोई नहीं
6. पशु प्लेग रोग किसके द्वारा फैलता है?
   (अ) विषाणु (ब)जीवाणु
   (स) प्रोटोजोआ (द)कोई नहीं
7. खुरपका–मुँहपका रोग किसके द्वारा फैलता है?
   (अ) विषाणु (ब)जीवाणु
   (स) उपर्युक्त दोनों (द)कोई नहीं

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. खुरपका–मुँहपका रोग कौनसे वायरस द्वारा फैलता है?
2. सर्रा बीमारी का प्रमुख लक्षण क्या है?
3. पशु प्लेग किस कारण से फलता है?
4. खुजली के प्रमुख लक्षण लिखिए।
5. स्वस्थ पशु के लक्षण लिखिए।
6. जहरबाद रोग कौनसे जीवाणु द्वारा फैलता है?
7. एन्थ्रेक्स रोग के प्रमुख लक्षण लिखिए।
8. खुरों के बीच किस रोग में छाले पड़ते है? उपचार लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्न बीमारियों के कारण लक्षण एवं उपचार लिखिए।
   (अ) थनैला (ब) खुरपका– मुँहपका
2. गलघोंटू रोग के लक्षण एवं उपचार का वर्णन कीजिए।
3. जहरबाद रोग के मुख्य लक्षण लिखिए।
4. गलघोंटू रोंग के रोग कारक एवं रोकथाम के उपाय का वर्णन कीजिए।
5. थनैला रोग से बचाव के उपाय लिखिए।
6. फड़किया रोग के लक्षण लिखिए।
7. एन्थ्रेक्स व जहरबाद के लक्षणों में तुलना कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. पशु माता रोग का सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. दुग्ध ज्वर क्या है?विस्तारपूर्वक समझाइये।
3. निम्न बीमारियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
   अ. सर्रा ब. खाज व खुजली
   स. फड़किया द. टिक फीवर
4. एन्थ्रेक्स रोग के कारण, लक्षण, उपचार व रोकथाम लिखिए।
5. जहरबाद रोग का सविस्तार वर्णन कीजिए।

उत्तरमाला

स 2. अ 3. ब 4. द 5. ब 6. अ 7. अ